بسم الله الرحمن الرحيم

जुम्मा खुतुबा

विषय:-

“अल -हुजरत: ग़ीबत (भाग-2)”

हज़रत मुहीउद्दीन अल ख़लीफ़तुल्लाह मुनीर अहमद अज़ीम (अ स)

20 September 2019
(20 Muharram 1441 AH)

अनुवादक : फातिमा जास्मिन सलीम
EMAIL:fjasmine14@gmail.com

अपने सभी चेलों सहित सभी नए चेलों, (और दुनिया भर के सभी मुसलमानों) को शांति का अभिवादन करने के बाद हज़रत ख़लीफ़तुल्लाह (अ त ब अ) ने तशहुद ,तौज, सूरह अल फातिहा पढ़ा और फिर उन्होंने अपना उपदेश दिया : **अल - हुजरत: ग़ीबत (भाग 2)**

अल्लाह (स व त) की कृपा से मुझे मेरे शुक्रवार के उपदेश के उसी विषय पर जारी रहने की तौफीक मिली है, जिसे मैंने पिछले सप्ताह "ग़ीबत" (चुगली) पर शुरू किया था। यह वास्तव में, जमात उल सहिह अल इस्लाम के सभी सदस्यों के लिए और सामान्य तौर पर बाकी के उम्मते मुसलमा के लिए भी एक बहुत ही महत्वपूर्ण विषय है ।

जब हम "ग़ीबत" पर विभिन्न हदीसों का विश्लेषण करते हैं, तो हम "ग़ीबत" की एक ही निष्कर्ष तक पहुंचते हैं, तब होता है, जब आप किसी के दोष के बारे में जानते हैं या आप उसके और उसकी खामियों के बारे में अधिक जानने की जासूसी करते हैं और उसके बाद आप हर जगह दूसरे की आंखों में उसे अपमानित करने के इरादे से लोगों में खबर फैलाते हैं। वहाँ इस तरह के लोग भी हैं, जो बड़े सभा / भीड़ के अवसर को, उसे नीचा दिखाने के एकमात्र उद्देश्य के साथ और उसे लोगों की नजरों में और अपमानित करने के लिए जब्त करते हैं। ऐसे लोग हर किसी को उस व्यक्ति की खामियों के बारे में बताना चाहते हैं और उन्हें उससे घृणा करने के लिए और उससे बहुत दूर जाने के लिए या उससे चौकन्ना रहने के लिए करते हैं। जब इस तरह की चीजें चुगलखोर की योजना के अनुसार होती हैं, वह इसमें एक महान आनंद प्राप्त करता है। ऐसे [दुष्ट-चित्त] लोग खुद की ओर, खुद की खामियां की ओर नहीं देखते हैं और वे उस समय पर विचार नहीं करते हैं, की जब उन्हें इन सभी कुकर्मों के लिए अपने निर्माता के सामने हिसाब देना होगा।

यह ईर्ष्या और घृणा है, जिसे वह अपने दिल में छिपा लेता है, जो उसे प्रतिक्रिया करने देता है और कुकर्मी / बुरे आदमी की तरह मूर्खतापूर्ण कार्य करता हैं। अब, एक और श्रेणी के लोग है, जो किसी व्यक्ति की अनुपस्थिति में उसकी खामियों के बारे में बात करते हैं और वह इसमें महान आनंद प्राप्त करते हैं। जब भी वह व्यक्ति अनुपस्थित होता है, तो वह उस पर बहुत सारी बुरी बातें करते है।

जब वह खुद को ऐसे लोगों से घिरा हुआ पाता है जो उसे सुनने के लिए तैयार हैं, तो वह

उस व्यक्ति के बारे में मूर्खतापूर्ण तरीके से बात करने का अवसर जब्त करता है, जिसे वह नीचा दिखाना चाहता है क्योंकि वह व्यक्ति उसके मान की रक्षा करने के लिए या अपने तर्क से असत्य ठहराने के लिए मौजूद नहीं है।

तो यह एक बड़ा गुनाह है और कुरान में अल्लाह (स व त) यह उदाहरण देते हुए कहता है: “क्या आप में से कोई भी अपने मृत भाई का मांस खाना पसंद करेगा?” जब कोई और व्यक्ति के मांस के खाने के बारे में, ऐसी बात सुनता है - तो उसके खिलाफ घृणा हो जाती है। एक आस्तिक (मुमिन) उसके लिए एक अरुचि विकसित करता है, लेकिन दूसरी ओर, एक मुर्ख जो नफ़रत को अपने दिल में पनाह देता हैं - जैसे एक तथाकथित पूर्व अमीर और जमात अहमदिया के उनके मुल्लाओं की तरह जिहोने ईश्वरीय घोषणापत्र की शुरुआत में किया था, वर्ष 2001 से महान पैगंबर (स अ व स) के उपदेश-मंच (minbar) पर - इस तरह के कार्य करने में किसी भी तरह की तबदीली नहीं मिलेगी। इसके विपरीत, ऐसे लोग हमारे मांस को आदमखोरों की तरह, बड़े चाव से खा गए।

यहाँ इस छंद में [अल-हुजुरत 49: 13], अल्लाह इस तथ्य पर ध्यान देने के लिए कह रहा है की जब आप हर दिन अपने भाइयों और बहनों के खिलाफ बात करते हैं - यानी न केवल आपके रक्त-संबंध - लेकिन आपके हर भाई और बहन जो एक ही समान विश्वास [सभी

विश्वासि] रखते हैं, इसलिए, जब आप उनके खिलाफ बात करते हैं, तो ऐसा लगता है, जैसे आप बड़ी खुशी और भूख के साथ उनके शवों का मांस खा रहे हैं। इस नज़रिए से, जिसमें

इस तरह का व्यक्ति, जो ऐसा करता है, यानी चुगली, इस विषय पर सोचें की अल्लाह के दृष्टिकोण से यह पूरी तरह से अलग दिखता है। अल्लाह के पैगंबर (स अ व स) ने भी इसे पसंद नहीं किया हैं और अल्लाह ने जो भी उनके सामने प्रकट किया, हमेशा उस बात से सहमत थे [अल्लाह के लिए, वह सभी जानता है ... वह जानता है कि किस इरादे से उन्होंने ऐसा किया है] ।

तो, "ग़ीबत" (और इससे जुड़ी सभी बुराइयाँ) - अपने भाई / बहन का मांस खाना - एक गंभीर आध्यात्मिक बीमारी है, एक गुनाह हैं और यह एक महान और गहरे दोष को भी सूचित करता है, जो चुगलखोर के, चरित्र में मौजूद होता है, उसके स्वाद में और उसके सुधार में और भी अधिक कठिन हो जाता है [दूसरों की तुलना में]। अगर कोई उसकी गलतियों का अन्तश्चेतना लेता है और अच्छी तरह से समझता है, कि उसने जो किया है वह बहुत ही गंभीर है, बहुत ही संगीन पाप, फिर ऐसा व्यक्ति जो पश्चाताप करता है, वह माफी के लिए परमात्मा की तलाश करेगा। वह पश्चाताप करेगा और फिर से, उस पाप के निकट न जाने का निर्णय लेगा, और जब वह ऐसा करता है, तो अल्लाह (स व त) उसे निश्चित रूप से क्षमा करेगा और उस पर उसकी कृपा बरसायेगा।

मैं आपको बता सकता हूँ, कि बहुत सारे लोग मुझे लिखते हैं और कुछ ऐसे भी लोग हैं, जिनका मुझसे सामना होता हैं, लेकिन कोई यह नहीं कहेगा: की मैंने "ग़ीबत" (चुगली) कि है। वहाँ कुछ ऐसे भी लोग हैं, जो अपनी गलतियों के प्रति सचेत हैं, और बाद में उनके बहाने पेश करने के लिए आगे आते हैं और वे अपनी गलतियों का एहसास करते हैं और खुद को सुधारने की कोशिश करते हैं और वे बाद में, उत्कृष्ट विश्वासी बन जाते हैं। दूसरी ओर, इस तरह के लोग भी हैं - उनमें से कई - जो अपनी गलतियों पर कायम रहते हैं और खुद को निर्दोष के रूप में दिखाने में लगे रहते हैं, भले ही, वे ऐसे पाप करने में कसूरवार हों । उनके अनुसार, वे हमेशा सही होते हैं! और वे महोदय. सभी - कुछ - जान्ने वाले के रूप में खुद को चित्रित करने के लिए उनके अहंकार के माध्यम से ढूंढ़ते हैं, और कि वे हमेशा सही होते हैं और उनके कमजोरियों / खामियों और गंभीर पापों को स्वीकार करने के लिए, उनमें कोई विनम्रता और साहस नहीं होता है। आप उन्हें यह कहते हुए नहीं पाएंगे: "मेरे लिए प्रार्थना करो, ताकि अल्लाह (स व त) मुझे माफ कर दे, क्योंकि मैंने वास्तव में, अल्लाह की नजरों के सामने बहुत बदसूरत काम किया है। " इस तरह का व्यक्ति सोचता है कि उसके गलत होने के बावजूद, जब वह कायम रहेगा और खुद को सही दिखाएगा, लोगों के पास यह धारणा होगी, कि वह वास्तव में सही / निर्दोष है। लेकिन अल्लाह की दृष्टि में, उस व्यक्ति के कर्म सही में घृणित है और अल्लाह के साथ उसके परिणाम गंभीर होंगे।

कभी-कभी, मैं ख़लीफ़तुल्लाह के रूप में अपने शिष्यों / अनुयायियों को कुछ सलाह देता हूँ और इस तरह के कई संदेश उन सभी पर/ आप पर ध्यान देने के लिए दिए जाते हैं। ऐसा इसलिए, ताकि आप हमेशा सही रास्ता अपना सकें। वहाँ कुछ ऐसे सदस्य हैं, जो सही मायने में उन संदेशों से प्रभावित हुए हैं, वे बिल्कुल पश्चाताप महसूस करते हैं और वे उन संदेशों को सीधे खुद के लिए ले लेते हैं। यदि वे पापों / गलतियों के कसूरवार नहीं हैं, जिसके लिए अल्लाह उन्हें चेतावनी दे रहा है, फिर उन्हें उसके लिए कोई डर नहीं है। उन्हें ख़ुशी को महसूस करना चाहिए, लेकिन, अगर वे वास्तव में कसूरवार हैं, जिसके खिलाफ अल्लाह ने चेतावनी दी है और खुलासा किया है,- और अल्लाह वास्तव में सभी दिलों को जानता है और सभी कार्यों को देखता है - और अगर वे अंदर कि गहराई से जानते हैं, कि वे इस तरह के दुराचार के कसूरवार थे, फिर उन्हें पश्चाताप करना चाहिए और खुद का सुधार करना चाहिए।

<u>एक सलाह:</u> इस दुनिया में हार को स्वीकार करना बेहतर है - इस तथ्य के बावजूद कि आप अच्छी तरह से जानतें हैं कि आप सही हैं - और वास्तव में, उसके फल [आपके सब्र का फल] आगे चल कर बहुत मीठा होगा। हम मनुष्य वास्तव में बहुत कमजोर होते हैं। हम अगर एक गलत काम करते हैं, तो हमें खुद को निर्दोष व्यक्ति के रूप में कायम रखने के लिए अभिनय नहीं करना चाहिए और हमें अहंकार नहीं दिखाना चाहिए। इसके विपरीत, आपको अल्लाह (दुआयें) कि सेवा में बहुत प्रार्थना करनी चाहिए, ताकि अल्लाह तुम्हें माफ करे और उस कार्य के परिणाम सवरूप जो आपने किए हैं, उसके बुरे अंत से आपको बचाए [अर्थात जब आप ऐसा कोई घृणित कर्म करते हैं]।

कभी-कभी आप देखते हैं, कि लोग किसी पर "ग़ीबत" (चुगली) करते हैं और इसमें बहुत आनंद उठाते है, और जब अचानक, वह व्यक्ति [जिसकि वे चुगली कर रहे हैं] उनके सामने आता है (कमरे में / जगह में प्रवेश करता हैं, जहाँ वे इस तरह की बातचीत कर रहे हैं),और इस प्रकार, वे जल्दी से अपनी बातचीत के विषय को बदल देते हैं और अपने चेहरे के रंग बदलते हैं - घबराए हुए - मानो, वे उस कार्य को करते वक्त पकड़े गए हों, और वे उस विषय को दूसरे किसी विषय से ढकने कि कोशिश करते हैं, जो उन्होंने अभी-अभी उस व्यक्ति के बारे में कहा, जिसे वे जल्दी से सुधार लेते हैं और कसूरवार महसूस करते हैं, उनके चुगली का विषय बताने की कोशिश करते हैं [अर्थात वह व्यक्ति जिसकी वे चुगली कर रहे थे] कि वे इस- इस तरह की बातें कर रहे थे [जैसे कि वह उस व्यक्ति से बिल्कुल भी जुड़ी नहीं हैं]। और जब वह व्यक्ति चला जाता है, या वे खुद को उससे दूरी पर पाते हैं, वे इसे विचित्र पाते हैं, वे हँसते हैं, लेकिन वास्तव में यह एक घबराहट से भरी हँसी होती है। उनके दिलों में उन्हें ऐसा लगता है, वे बस इस कांटे से बहार आगए हैं - उस व्यक्ति द्वारा जिसकी वे चुगली कर रहे थे, वे लगभग इस चुगली के कार्य में फंस गए थे! वे पूरी तरह से सचेत हैं कि वे एक गलत चीज़ कर रहे थे।

एक और घटना है, जब आप केवल किसी के बारे में अच्छी बातें कर रहे होते हैं। आप उसकी चुगली नहीं कर रहे हैं, और इस प्रकार जब आप जानते हैं कि वह व्यक्ति उस ही जगह पर आ गया है जहाँ पर आप हैं (उस ही कमरे में), या बस आपके पीछे खड़ा है, आप शर्मिंदा या व्याकुल महसूस नहीं करेंगे कि आप उसके बारे में (उसके अच्छे गुणों के बारे में) बात कर रहे थे; इसके विपरीत, आप केवल अच्छे इरादे से और अच्छी तरह से बात कर रहे थे और इस प्रकार से आप शर्मिंदा नहीं महसूस करेंगें कि उस व्यक्ति ने आपको छिपकर सुन लिया [आपके लिए, यह भी जान लें कि आप इसे दिखाने के लिए नहीं कर रहे थे, या उस व्यक्ति को उद्देश्यपूर्ण आपकी, उसके प्रति अच्छी बातों को सुनने रखें]। संभवतः, जब उस व्यक्ति ने छिपकर आपको सुन लिया है, तो आप उसके बारे में अच्छी बातें कहते हैं, ऐसा न हो, कि आप अपनी [अच्छी] बातचीत में हो सकता हैं, आप फिक्र करें कि आपने उसे चोट पहुँचाई हो और आप अपनी क्षमा याचना प्रस्तुत करें, लेकिन आपके भीतर गहराई में, आप जानते है कि आप "ग़ीबत" नहीं कर रहे थे। वह व्यक्ति जिसकी आप प्रशंसा कर रहे थे यहाँ तक कि वह शर्म करे, कि आप उसके बारे में इतना अच्छा बता रहे थे।

वहाँ दूसरे प्रकार कि स्थिति है, जहाँ कोई स्पष्ट रूप से खुला- खुला झूठ बोल रहा है। यह "ग़ीबत" नहीं है [लेकिन इससे भी बदतर]। मुस्लिम, किताब-उल-बिर में एक ऐसी स्थिति का उल्लेख किया गया था, जिसमे हज़रत अबू हुरैरा (र अ) ने बताया कि हज़रत मुहम्मद (स अ व स) ने अपने सहाबा (साथियों) से पूछा: "क्या आप जानते हैं कि चुगली क्या है?" उन्होंने कहा, "अल्लाह और उसके रसूल बेहतर जानते है।" उन्होंने जारी रखा, "अपने भाई के बारे में कुछ कहना जिसे उनका भाई नापसंद करता है। "फिर किसी ने पूछा," अगर मैं कहूँ कि जो कुछ मेरे भाई के बारे में मैं कह रहा हूँ, वो सच है, तो क्या होगा?

"पैगंबर मुहम्मद (स अ व स) ने जवाब दिया:" अगर आप जो कह रहे हैं, वो सच है, तो आप उसके बारे में चुगली कर रहे हैं, और अगर यह सच नहीं है, तो आप उसकी झूठी निंदा कर रहे है ।"

पवित्र पैगंबर (स अ व स) ने कहा है, कि अगर उस व्यक्ति का दोष है, जो आप उसकी अनुपस्थिति में उसके बारे में बात कर रहे थे, तो यह "ग़ीबत" (चुगली) है। लेकिन अगर क्या आप उसके बारे में झूठ बोल रहे थे, तो यह एक झूठा आरोप है, एक दोष लगाना है। और यह एक इससे भी बड़ा पाप है (अर्थात जब आप किसी व्यक्ति पर सभी प्रकार के दोषों का ढेर करते हैं, जब आप कुछ भी साबित नहीं कर सकते हैं। आप उसे व्यभिचार आदि के साथ दोषी ठहराते हो, बिना चार गवाह लाए ... और सिर्फ उसे अपमानित करने के लिए, अन्य झूठे आरोप लगाते हो) - यह वास्तव में, एक ऐसा महान पाप है, कि कुरान ने इसके लिए अनुशासनात्मक सज़ा निर्धारित किया हैं। तो अल्लाह के क्रोध कि कोई सीमा नहीं होगी, जब कोई निर्दोष व्यक्ति पर इस तरह के झूठे आरोप लगाता हैं।

तो, दोनों ही मामलों में (यदि आप जो कह रहे हैं, वह सच है या नहीं - किसी के दोष के विषय में), इसके बारे में बात करने का कोई वाजिब कारण नहीं है। अगर, वह जो आप कह रहे हैं- सच है, तो यह "ग़ीबत" है और अगर यह झूठ है, तो यह दोष लगाना है। किसी पर झूठे आरोप लगाना किसी को मारने के बराबर (समान) है। आध्यात्मिक दुनिया में, दोष लगाना एक जुर्म के बराबर है; और इस तरह यह हत्या करने के पाप के बराबर है। यह मृत शरीर का मांस खाने से ज्यादा घृणित नहीं है, बल्कि, यह उससे भी ज़्यादा बदतर हैं। यह बहुत अधिक अन्यायपूर्ण है। और आप इस सब के लिए अल्लाह के सामने जवाबदेह होंगे।

तो, यह विषय वास्तव में विशाल है, लेकिन इसका सीधा अर्थ भी है। लेकिन जहाँ समाज के नैतिक स्तर की सुरक्षा का संबंध है, यह बहुत ज़रूरी हो जाता है। यदि, आप इस विषय को नहीं समझ पाए हैं और आप ने अपने अधिकार को पूरा नहीं किया, तो यह उत्तरदायी है कि आप कई बार - ऐसी बुराईयों के इच्छुक बन जायेंगें हैं; आप नफ़रत के बीज बोने के लिए ज़िम्मेदार बन जाते हैं। और जब यह हुआ, तो यह पूर्ण पाखंडी हैं, जो बड़े सुचना-पट्ट दिखाते हैं, जिसमें कहा गया है: "सभी के लिए प्यार, किसी के लिए नफ़रत नहीं"। क्यों दिखावा करना, जब आपने नफ़रत के बीज़ के पौधे जमात [वादा किए गए मसीह के जमात में]के लोगों में लगाए हैं, इस तरह से, कि यह घृणा परिवारों- रक्त संबंधों - के दिल में घुस गई है - ऐसी घृणा जो इस तरह से इस रास्ते पर और अधिक गहराई तक ले जाती हैं और हर जगह परिवार के संबंधों को चीरने / तोड़ने, और इस घृणा के माध्यम से, आप उन्हें निर्देश देते हैं, कि अपने खुद के परिवार - के भाइयों और बहनों का बहिष्कार करें - और आप अपनी नाक उनके निजी पारिवारिक जीवन में घुसेड़ते हैं?

लोगों की आंखों के लिए, आप जीवन के सुचना- पट्ट इतने बड़े बनाते हैं "सब के लिए प्यार, किसी के लिए नफ़रत नहीं", लेकिन अल्लाह की नज़रों के सामने, यह [यह सब दिखावा] व्यर्थ है। अपने खुद के कार्यों के माध्यम से, आपने अपने आपको परमात्मा कि शिक्षाओं से दूर कर लिया है। कैसे पाखंडी हैं ! इंशा-अल्लाह, अगले हफ्ते, मैं इसी विषय पर व्याख्या करूँगां।

इसलिए, हम प्राथना करते हैं (दुआएं करते हैं) कि हमें जमात उल सहिह अल इस्लाम में इस तरह के लोग से न मिलें । आशा हैं, अल्लाह कभी भी इस प्रकार के लोगों को समृद्ध न बनाए और उनकी संख्या में वृद्धि न करें, और उन्हें दान से मुक्त न होने दें ,जब वे "ग़ीबत" "तजस्सुस", ईर्ष्या, झूठ और दोष में लिप्त हों। इसके विपरीत, हम एक ऐसा जमात चाहते हैं, जो मुत्तक्कुं से निर्मित हो (दैवभीरु, धार्मिक, धर्मपरायण लोग), वे सभी जिनके दिलों में/ हमारे दिलों में अल्लाह के प्रति मजबूत खौफ है, ताकि, हम ऐसे घृणित कामों को अंजाम न दें, जो हम पर अल्लाह के कोप को आकर्षित कर सकें।

आशा हैं, अल्लाह उन लोगों को बनाए, जो अपने स्वयं के सुधार के लिए जमात उल सहिह अल इस्लाम को एकीकृत करते हैं। हमें अधिक मात्रा में नहीं चाहिए - बहुत सारे लोग, हम केवल गुणवत्ता चाहते हैं - विश्वासि जो सच्चे और अच्छे हैं और जो खुद को सुधारना चाहते हैं, ताकि वे सहीह मुस्लिमीन (विश्वासी) बने, और न कि वे, जो केवल दिव्य रहस्योत्घाटन को एकीकृत करते हैं, जैसे खुद के सुधार के प्रयासों को बनाए बिना और एक सच्चा आदर्श बनने के लिए जो अल्लाह आपको बनाना चाहता हैं ।

आमीन, सुम्मा आमीन, या रब्बुल आलमीन!